

मेरी और मेरी कामवाली की चुदास-2

“मेरी कामवाली बहुत खूबसूरत थी, मैंने उसकी
वासना जगाई और उससे लेस्बीयन सेक्स किया.
लेकिन लंड की अपनी ही महानता है, इसके बिना चूत
भी अधूरी रहती है और उसको पाने के लिए रोती है.

”

...

Story By: (pchopra)

Posted: Saturday, September 15th, 2018

Categories: [लेस्बीयन सेक्स स्टोरीज](#)

Online version: [मेरी और मेरी कामवाली की चुदास-2](#)

मेरी और मेरी कामवाली की चुदास-2

अब तक इस सेक्स स्टोरी में आपने पढ़ा कि बेहद खूबसूरत और हसीन कामवाली पंकी मेरे साथ ही सोने लगी. अब मैं उसे लेस्बियन सेक्स के लिए तैयार करने की जुगत में थी. अब आगे..

रात में एक नाइटी जो आगे से खुल जाती थी, मैं उसे पहना करती थी और नीचे कुछ नहीं डालती थी. जानबूझ कर मैं ऊपर से खोल दिया करती थी. मैं तो उसके मम्मों पर और चूत पर हाथ मारा ही करती थी, मगर अब उसका हाथ भी मेरे मम्मों पर पड़ने लग गए.

कोई दो दिन बाद मैंने अपनी नाइटी पूरी ही आगे से खोल ली, या यूं कहा जाए कि उस दिन मैं उसके सामने नंगी ही हो गई. उसका हाथ मेरी चूत पर पड़ा ही नहीं बल्कि वहाँ पर फिरना भी शुरू हो गया. मैंने भी यही सब कुछ करना शुरू कर दिया.

वो बोली- दीदी, पता नहीं क्या हो रहा है.

मैंने कहा- जो हो रहा है, होने दो.. और तुम जो कर रही हो, करती जाओ.

बस फिर तो हम दोनों ही नंगी होकर सोने लग गयी और वही हुआ धीरे धीरे हम दोनों एक दूसरे से खेलने लगी.. अंततः मेरी ख्वाहिश पूरी होना शुरू हो गई. हम दोनों 69 में हो कर एक दूसरे की चूत को चाट चाट कर ठंडा कर लेती.

मगर लंड की अपनी ही महानता है, इसके बिना चूत भी अधूरी रहती है और उसको पाने के लिए रोती है. अब लंड तो घर पर लाया नहीं जा सकता था. यह मैं पूरी तरह से जानती थी. इसका उपाय भी मैंने ढूँढ लिया.

मैंने उससे एक दिन कहा कि एक पार्सल कोरियर से आएगा, तुम ले लेना. उसको कोई पैसे

नहीं देना. उसे खोल कर देखना कि पसंद आया या नहीं.. मगर जब वो कोरियर वाला जा चुका हो तभी.. और दरवाजा बंद कर के ही खोलना.

मैं ऑनलाइन डिल्डो मंगाया था. उस पार्सल में एक बेल्ट से बंदा हुआ रबर का लंड था, जो 8 इंच लंबा और 2.5 इंच मोटा था. जब मैं वापिस आई तो उसने दरवाजा बंद किया हुआ था और उसे दरवाजा खोलने में कुछ देर लग गई.

मैंने कहा- क्या हुआ ?

वो हंस कर बोली कि दीदी आप का मँगवाया हुआ खिलौना आ गया है, उसी को दरवाजा बंद करके देख रही थी.

मैंने कहा- दिखाओ.

तो उसने वो रबर का लंड दिखाया.

मैंने कहा- ऐसे नहीं.. बांध कर दिखाओ.

वो शर्मा गई तो मैंने कहा- अब क्या शर्मा रही हो छोटी.. हमारे बीच में सब कुछ तो खुल गया है.

उसने शर्म त्याग दी और झट से उसे बाँध कर दिखाया. वो लंड सच में असली का लंड लग रहा था क्योंकि रबर का रंग और उस पर लंड की फूली हुई नसों की तरह से बनावट भी उस पर बनी थी.

मैंने कहा- आज रात को इसका उद्घाटन कौन करेगा ? तुम या मैं ?

वो बोली- आप जैसा बोलेंगी.

मैंने कहा- तुम ही इसे बाँध कर मुझे आज चोदना, मैं तुम्हें कल चोदूँगी. इस तरह से रात भर हम चुदाई किया करेंगे. एक दिन एक लड़का बन कर रहेगी तो दूसरे दिन वो ही लड़की और दूसरी लड़का बनेगी.

रात को उसने अपनी कमर के नीचे बेल्ट बाँध ली. पूरा लटकता हुआ लंड बाहर निकला हुआ था. उस लंड को पहले मैंने चूस चूस कर गीला किया, फिर उससे कहा कि अब चोदो मेरी चूत को.

उसने बहुत अच्छी तरह से मेरी चूत को चोदा. जिस तरह से उसने मुझे चोदा था, उससे यह नहीं लग रहा था कि यह इस काम की कोई नई खिलाड़ी है.

मैंने उससे पूछा- सच सच बताओ तुमने चुदाई कहाँ से सीखी ?

उसने कहा- दीदी मत पूछिए, हम लोग ग़रीब परिवार के होते हैं और चुदाई तो कम उम्र में ही पता लग जाती है. जब हमारा बाप माँ को चोदता है.

मैंने उससे पूछा- ऐसे नहीं.. मुझे पूरी तरह से बताओ.

उसने कहा- दीदी तब मुझे कुछ भी पता नहीं होता था सिवाय इसके कि जिसे चूत कहा जाता है, वो सिर्फ मूतने के लिए होती है. मगर एक दिन रात को मैं सो रही थी तो माँ की कुछ बोलने की आवाजें मेरे कान में पड़ गईं. मगर मैं उठी नहीं क्योंकि मेरा बाप बात बात पर थप्पड़ मार दिया करता था. मैं सोने का बहाना करते हुए चद्दर से आंखें निकाल कर देखने लगी. तब मैंने देखा कि माँ और बाप दोनों ही नंगे थे और बाप का मूतने वाला (लंड) खड़ा हुआ था और बहुत लंबा और मोटा भी हो चुका था. उसने माँ को अपनी गोदी में उठा कर अपना लंड उसकी चूत में डालकर माँ को बोला कि अब धक्के मारो इस पर. माँ धक्के मारते हुए बोल रही थी कि अगर लड़की जाग गई तो.. इस पर मेरा बाप बोला तो क्या हुआ.. उसे आज नहीं तो कल तो पता लगना ही है कि चूत बिना लंड के और लंड बिना चूत के नहीं रहा करते. और सुन.. जब चुदाई चालू हो, तब फालतू की बात मत किया करो.. चुदाई का सारा मज़ा खराब हो जाता है.

मैंने पिकी से पूछा- फिर क्या हुआ ?

पिकी अपने माँ बाप की चुदाई का आँखों देखा हाल सुनाने लगी :

कुछ देर बाद मेरे बाप ने माँ को नीचे लिटाया और उसके ऊपर चढ़ गया. अब कुछ नज़र नहीं आ रहा था, बस बाप के चूतड़ हिल हिल कर आगे पीछे हो रहे थे. मुझे कुछ समझ नहीं आया कि यह क्या हो रहा था. फिर कुछ देर बाद दोनों एक दूसरे की बांहों में पड़े रहे और मुझे नींद आ गई. अब मुझे लगा कि यह भी कोई खेल है, जो मम्मी पापा करते हैं. दूसरे दिन रात तो मैं सोने का नाटक करती रही.. मगर सोई नहीं. कुछ देर बाद पापा ने मम्मी से कहा- आ जल्दी से.

मम्मी बोलीं- बस तुम्हें सिवा मेरी चूत के कुछ और नहीं दिखाई देता.

पापा ने कहा- और हरामजादी ज़्यादा बकबक ना कर.. वरना किसी और चूत को तेरे सामने ही लाकर चोदूँगा और तू देखती रहेगी.

यह सुनकर मम्मी चुपचाप पापा के पास चली गई.

पापा ने कहा- कपड़े तेरा बाप उतारेगा. मेरा लंड खड़ा हुआ है, तू अभी तक कपड़े डाले हुए है. उतार इन हरामजादे कपड़ों को.

मम्मी ने कपड़े उतारने शुरू कर दिए और पूरी नंगी हो गई. पापा ने उसके मम्मों को दबा दबा कर पीना शुरू किया, जैसे पड़ोस वाली चाची का लड़का उनका दूध पीता है.

कुछ देर बाद पापा ने कहा कि अपनी चूत को मेरे मुँह पर रखकर बैठ जा. मम्मी ने वैसे ही किया और अब वे दोनों कुछ ऐसे बैठे थे कि मुझे पूरी तरह से दिखाई पड़ रहा था. पापा मम्मी की चूत को अपने मुँह पर रख कर चूस रहे थे और मम्मी 'हा उ..' कर रही थीं, कभी बोलती थीं कि आह.. दाँत ना मारो.. धीरे धीरे करो.. तभी तो मज़ा आएगा.

कुछ देर यह सब होने के बाद पापा ने अपना लंड मम्मी के मुँह में डाल दिया. मम्मी बैठी रहीं और पापा खड़े हो गए और अपने लंड को मम्मी के मुँह में अन्दर बाहर करने लग गए. तब मम्मी ने पापा से कहा कि लाइट तो ऑफ कर लिया करो वरना कभी लड़की जाग गई तो उसे नज़र आ जाएगा.

पापा को शायद समझ में आ गया और उन्होंने लाइट बंद कर दी. इसके बाद मुझे कुछ नज़र नहीं आया. मगर मम्मी और पापा की आवाज़ें ज़रूर सुनने को मिल रही थीं. मम्मी पापा से बोल रही थीं कि राजा तुम्हारा लंड बहुत मस्त है. आज पड़ोसन कह रही थी कि उसका पति तो एक मिनट में ही खलास हो जाता है.. साले के लंड से कुछ मज़ा नहीं आता. मैंने उससे कहा कि आ जा मेरे आदमी के पास आ जाओ.. हमारे आदमी के पास दिन में ही तेरी चूत को तारे नज़र आ जाएंगे. एक बार चूत में घुस गया ना तो फिर उसको चूत से बाहर निकलवाने के लिए हाथ जोड़ोगी.

इस पर पापा कह रहे थे कि तेरी चूत मस्त है रानी.. मैं इसके पीछे पागल होता हूँ. तुम जब नहीं होती तो मेरा लंड रो रो कर तुम्हें याद करता है. इस तरह के बातें सुन सुन कर मुझे चुदाई का पता लग गया और फिर एक दिन असली चुदाई भी हो गई.

मैंने पिकी के निप्पल मींजते हुए पूछा- वो कैसे हुआ ?

पिकी भी मेरी चूत में उंगली देते हुए बोली- मैं अपनी माँ के साथ मामा के यहाँ किसी शादी में गई थी. तब मेरी उम्र जवानी की दहलीज पर आ गई थी. वहाँ मामा का लड़का जो कि मेरी उम्र का ही था. वो मुझे एक दिन कहीं घुमाने ले गया. वहाँ पर एक कुत्ता कुतिया की चूत को चाट रहा था. उसने कहा कि देख इनको.. साले खुले में ही लगे हैं.

मैंने देखा कि मुँह से चाटते ही कुत्ता कुतिया के ऊपर चढ़ गया और अपना लंड उसकी चूत में फंसाने लगा. कुछ देर धक्के मारने के बाद वो रुक गया और फिर देखा कि वो दोनों अपना अपना चूतड़ मिला कर एक हो गए हैं और दोनों का मुँह एक दूसरे से उल्टी तरफ था. अब वो अलग अलग होना चाहते थे मगर हो नहीं पा रहे थे. मुझे भी यह सब देखने में मज़ा आने लगा.

मैंने उससे पूछा कि यह कब अलग होंगे. उसने कहा कि बैठ जाओ और देखती जाओ. कुछ

देर बाद तक, जब वो अलग अलग ना होने पाए तो मैंने देखा कि वो चुपचाप खड़े हो गए. फिर कोई 10 मिनट बाद वो अलग अलग हो गए.. मगर कुत्ते का लंड जब बाहर निकला तो मैंने देखा कि नीचे से तो ठीक था मगर ऊपर से पूरा गेंद जैसा बना हुआ था. मामा के लड़के ने कहा कि यही गेंद इसको जल्दी अलग होने नहीं देता है. मैंने पूछा कि ये आदमियों में भी होता है. तो उसने कहा कि क्या तुम देखोगी कि कैसा होता है. जब मैंने कुछ नहीं कहा तो वो मुझे किसी सुनसान जगह पर ले आया और अपनी पैंट खोल कर बोला कि देख ले आदमी का ऐसा होता है.

उसका वो लटका हुआ था. मैं उसको हाथ लगा कर पकड़ने लगी, मगर मेरे हाथ लगाते ही उसमें बिजली का करंट दौड़ने लगा और उसका लंड एकदम से खड़ा होने कर झटके मारने लगा.

वो बोला कि मेरा तो देख लिया, अपना छेद भी तो दिखाओ.

मैंने कहा- मुझे शरम आती है.

तो उसने कहा- जब मुझसे कहा था, तो शरम नहीं आई.. इसको हाथ लगाया तो शरम नहीं आई. अब अपनी बारी आई तो शरम आती है.

उसने मेरी सलवार का नाड़ा खोल दिया और बोला कि दिखा ज़रा मुझे भी.

मैंने अब पूरी सलवार नीचे करके उसे अपनी देसी चूत के दर्शन करा दिए. उसने भी मेरी चूत पर हाथ लगा लगा कर देखा.

फिर बोला- हम्म.. तो यह चूत है, जिसमें लंड जाता है. ज़रा डाल कर देखूं.

मैंने कहा- हां देख लो.

उसने अपना लंड मेरी चूत के मुँह पे रख कर अन्दर करना चाहा मगर वो अन्दर नहीं जा पाया. मैंने कहा- छोड़ो भाई... कभी बाद में किसी और के साथ कर लेना.

वो बोला- नहीं जी.. मैं तो आज ही तुम्हारी चूत के अन्दर ही करूँगा. मेरे बहुत से दोस्त

चूत में अपना लंड डाल चुके हैं. मैं ही एक बचा हूँ.. जिसने अब तक चूत ही नहीं देखी थी. आज तो मैं तेरी चूत में लंड डालकर ही मानूंगा. मैं कुछ नहीं बोली क्योंकि मेरी भी चूत चुदवाने की इच्छा हो रही थी. इतने दिनों से मम्मी को इस खेल का मजा लेते देखा था.

तभी वो लंड हिला कर बोला- तुम अपना थूक इस पर लगाओ.

मैंने अपना थूक उसके लंड पर डाल दिया. उसने भी अपना थूक मेरी चूत के ऊपर लगा दिया. अब उसका लंड और मेरी चूत थूक की लिसलिसी से फिसलन पैदा कर रही थी. उसने इसी का फ़ायदा उठा कर अपना लंड मेरी चूत में घुसेड़ना शुरू कर दिया. मगर चूत मेरी अब भी अपने अन्दर लंड को लेने के लिए तैयार नहीं थी. अब भाई ने मुझे लिटा दिया और मेरी चूत को चाटना शुरू कर दिया और चूत को खोल खोल कर अपनी लार से भर दिया. फिर उसने अपने खड़े लंड को चूत के मुँह पर रखकर एक बहुत जोर का झटका मारा.. उसका नतीजा निकला कि लंड का अगला हिस्सा चूत में समा गया और मेरी चूत से खून निकलना शुरू हो गया. मैं एकदम से घबरा गई और रोने लगी.

मगर उसने कहा- मुझे सभी दोस्तो ने बता दिया था कि जब पहली बार चूत में लंड जाएगा तो उसमें से खून निकलेगा मगर थोड़ी देर बाद दोनों को पूरा मज़ा आएगा.

मैं चिल्लाती रही, मगर वो अपना लंड चूत में घुसेड़ता रहा और तब तक उसने अपने मन का किया, जब तक कि पूरा लंड मेरी चूत की जड़ तक अन्दर नहीं कर दिया. जब पूरा लंड अन्दर जा चुका, तब वो आराम से मुझ पर लेट गया और साँस लेने लगा.

मगर खड़ा लंड उसको आराम करने नहीं दे रहा था. उसने अब धक्के मार मार कर लंड को अन्दर बाहर करना शुरू कर दिया. मुझे सिवा दर्द के कुछ मज़ा नहीं आया और कुछ नहीं मिला मुझे.

जब उसने अपना लंड बाहर निकाला तो वो अपने मुँह से पिचकारी निकालने लगा.

मैं दर्द से बिलबिलाती हुई शांत पड़ी थी.

आधे घण्टे बाद उसका लंड फिर से खड़ा हो गया और वो बोला- अबकी बार तुम्हें भी मज़ा आएगा.

मैंने कहा- नहीं मुझे अब कोई मज़ा नहीं लेना. पहले ही से मेरी जान जा रही है.

मगर उसने कहा- एक बार और करवा लो अगर नहीं आया तो मैं बीच में ही छोड़ दूँगा.

मुझे मालूम था कि जरूर इस खेल में मज़ा आता होगा, तभी तो मम्मी पापा इस खेल को खेलते हैं.

ये वासना से युक्त सेक्स स्टोरी आपको कैसी लगी, प्लीज़ मुझे मेल करें.

pchoprap000@gmail.com

कहानी जारी है.

